International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 12, December- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

मध्यकालीन राजस्थान की वेशभूषा और उनकी अलंकरण शैली पर मुगल प्रभाव और सामजिक समरसता

डॉ. प्रेरणा सक्सेना
एसोसिएट प्रोफेसर, टेक्सटाइल विभाग, राजकीय कला महिला महाविद्यालय, कोटा, राजस्थान

वेशभूषा, अलंकरण एवं श्रृंगार–साधनों से जातीय सभ्यता का बोध होता है। इन बाह्य परिधानों के भीतर से झलकती हुई उसकी संस्कृति और सामजिक समरसता का दर्शन भी होता है।
राजस्थान की रेतीली पृष्ठभूमि में सजीले रंग और छापों में कश्मीरी गुलों की रंगत परिणाम है,राजस्थान के लम्बे अरसे तक कषाणों,हूणों और खासकर मुगलों के अधिपत्य में रहने का द्य
इस्लाम में जीवों का चित्रण धर्म विरूद्ध था। जिसके फलस्वरूप रंग, रेखा, अलंकरण, सूक्ष्म अलंकारिक आलेखनों एवं ज्यामितीय आकारों का विकसित रूप निखरकर आया । भारतीय संस्कृति के करीब आते ही धार्मिक कट्टरता मे लचीलापन आया और पशु – पक्षियों, मानव आकृतियों और फूल पत्तियों का अंकन होने लगा। मुगल कला के अलंकरण ईरान की कला से प्रभावित हैं। जैसे जैसे उनकी कला मुग़ल शासकों के माध्यम से भारतीय कला के समीप आती गयी, भारतीय कला में उसका प्रभाव दिखने लगा द्य
प्रस्तुत पत्र "मध्यकालीन राजस्थान की वेशभूषा और उनकी अलंकरण शैली पर मुगल प्रभाव और सामाजिक समरसता" के सम्बन्धों की विवेचना करता है और वर्तमान समाज में उस युग के प्रभावों की निरन्तरता बने रहने के कारणों की समीक्षा करता है द्य
राजस्थान में मुगल इतिहास का प्रथम काल वह है जिसमें स्थानीय राजाओं ने मुगलों का विरोध किया जिनमें सांगा, चंद्रसेन, प्रताप एवं मालदेव प्रमुख थे। दूसरे काल में अकबर की सत्तावादी नीति को मैत्री का जामा पहनाया गया और वैवाहिक संबध बनाकर अनेक राजस्थानी नरेश तीन पीढ़ी तक मुगल सत्ता के पोषक बने रहे।
राजस्थान में निम्न घटनाओं को राजनैतिक और सामजिक दृष्टि से उथलपुथल वाला माना जा सकता है –

1018 महमूद गजनवी द्वारा प्रतिहार राज्य पर आक्रमण,विजय
1191 मुहम्मद गोरी व पृथ्वीराज चौहान के मध्य तराइन का युद्ध – मुहम्मद गोरी की पराजय
1234 रावल जैत्रसिंह द्वारा इल्तुतमिश,सुल्तान बलवन पर विजय
1290 हम्मीर द्वारा जलालुद्दीन का आक्रमण विफल करना
1303 अलाउद्दीन खिलजी द्वारा राणा रत्नसिंह पराजित,जौहर, चितौड़ पर खिलजी का अधिकार,
1308 कान्हडदेव चौहान खिलजी से पराजित,जालौर का खिलजी पर अधिकार
1553 कुम्मा द्वारा मालवा के महमूद खिलजी को हराना फिर शम्स खाँ को हरा नागौर पर कब्जा
1528 राणा संग्राम की बाबर के हाथों पराजय
1541 राजा मालदेव द्वारा हुमायू को निमंत्रण देना
1542 हुमायूँ का मारवाड़ सीमा मे प्रवेश
1544 राजा मालदेव व शेरशह के मध्य जैतारण (सामेल) का युद्ध, मालदेव की पराजय
1564 राव चन्द्रसेन की पराजय, जोधपुर मुगलों के अधीन
1582 अकबर द्वारा रामसिंह को जोधपुर का शासक नियुक्त
1580 मुगल सेना द्वारा कुम्भलगढ़ पर अधिकार
1580 अकबर द्वारा अब्दुल रहीम खानखाना को राजस्थान का सूबेदार नियुक्त करना।
1581 आमेर के राजा भारमल की मृत्यु, मानसिंह को सिंहासन मिला
1604 सम्राट अकबर ने राजा मानसिंह को 800 मनसव प्रदान किये।

राणा अमरसिंह द्वारा मुगलों से सन्धि

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 12, December- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

राजा मिर्जा जयसिंह आमेर का शासक नियुक्त होना

राजपूतों से पहले राजस्थान में मालव ,यूनानी , हूणों, कुषाणों,प्रतिहारों का शासन था द्य कई इतिहासकार राजपूतों को उत्तर की ओर से आये हुए सीथियन अर्थात शक तो कोई कुषाण या हूण बताते हैं। राजपुताने के इतिहास लेखक कर्नल टॉड ने राजपूतों के शक होने के प्रमाणों में उनके बहुत से प्रचलित रीति–रिवाजों का जो शक जाति के रिवाजों से मिलतेजुलते है का उल्लेख किया है द्य तुर्कों और मुगलों के साथ सैन्य और व्यापारिक संबंधों ने यहां के परिधानों के मूल स्वरुप को बदल दिया।

मध्यकालीन राजस्थान के उत्तरी दृपूर्वी भागों में तुर्कों और मुगलों का प्रभाव अधिक रहा और इसी कारण उस क्षेत्र के सांस्कृतिक जनजीवन पर उनका प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है द्य वस्त्रों की प्रतीकात्मकता सामूहिक भावनाओं की मूक अभिव्यक्ति है द्य इस अभिव्यक्ति को समझने और वस्त्र सम्बंधित जातिगत व्यवहारों को जानने के लिए इतिहास का अध्ययन आवश्यक है द्य ये ऐतिहासिक घटनाक्रम ना केवल परंपराओं के स्वरुप को समझाने में सहायक हैं बल्कि इनके द्वारा ये भी समझा जा सकता है कि किस प्रकार लोकजीवन में वस्त्र परम्परायें के मूक रहकर भी व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार को नियंत्रित करती हैं। धार्मिक क्षेत्र से बाहर उन्मुक्त आत्माभिव्यक्ति के क्षेत्रों में भी वस्त्र कला का महत्वपूर्ण स्थान है। वेशभूषा, अलंकरण एवं श्रृंगार–साधनों से जातीय सभ्यता का बोध होता है। इन बाह्य परिधानों के भीतर से झलकती हुई उसकी संस्कृति का दर्शन भी होता है।

समाज में महिलाओं की स्थिति , सामजिक स्तर आदि प्रतीकात्मक रूप से लोगों पर अंकुश रखते हैं द्य जहाँ एक ओर जागीरदारी प्रथा–जाति व्यवस्था ने वस्त्र परम्पराओं और में तेजी से होने वाले परिवर्तनों को रोकने का कार्य किया वहीँ दूसरी और सांस्कृतिक समन्वय और शासन की उदारता ने भी राजस्थान की वस्त्र परम्पराओं को विकसित करने में अपना योगदान दिया द्य मुगलों की दरबार परम्परा ने राजपूती दरबार को प्रभावित किया। दरबार के लिए वस्त्र तैयार करने पर ईनाम प्राप्त करने की होड़ में अनेक वस्त्रकलाओं का जन्म हुआ।

स्थानीय स्तर पर इनको तैयार करने के लिए विदेशी कारीगर बुलाये गए। स्थानीय सामग्री और परम्परागत हुनर ने वस्त्र अलंकरण की अनेक संभावनाओं–विधियो को विकसित किया।

राजस्थान के वस्त्र शिल्प और पहरावे में विदेशी जातियों जैसे शकों ,कुषाणों , हूणों की सिंथियन परम्पराओं के अनेक उदाहरण मौजूद हैं जैसे बलूचिस्तान की पारम्परिक कसीदाकारी और बीकानेर के मेघवाल कसीदे में गजब की साम्यता है । ये साम्य ना केवल मोटिफ में है बल्कि बलूचिस्तान के कुर्दों और पर्सियन लोगों के परम्परागत पहनावों के साथ भी है ।

लगातार हुए आक्रमणों के कारण और दरबारी परम्पराओं के कारण यहाँ बाहर से बेहतरीन कारीगर कारीगर या तो लाये गये या आ बसे।

भवन निर्माण और वस्त्र छापों ,जरी के काम और लहरिया ,बंधेज तक में साम्यता है। कुम्भलगढ़ के किले, विजय स्तम्भ , डूंगरपुर ,नवलगढ़ की हवेलियों , जयपुर के आमेर महल के स्थापत्य में वस्त्र शिल्प से साम्य मिलता है।

स्थापत्य में प्रयुक्त फूलों के मोटिफ ब्लाक प्रिंटिंग में प्रयुक्त हुए हैं तो जालीदार झरोख अजरख छपाई का हिस्सा बने। कपड़ों के शिल्प में निखार मुग़ल दरबार परंपरा के कारण भी आया । इस अवधि के कपड़े सौंदर्य को, बनावट और पैटर्न की समृद्ध परपंराओं को दर्शाते हैं। सामाजिक उच्चता प्रदर्शित करने के लिये कसीदाकारी में बहुमुल्य रत्नों और सोने की कारीगरी वाले कपडों का प्रयोग बढ़ा तो सांगानेरी, बगरू या अजरख की छपाई, सभी में पर्शियन नमूनों का प्रभाव दिखने लगा । पगड़ी की कई शैलियाँ विकसित हुई जैसे शाहजहानी ,खंजरशाही आदि ,जो कि मूल रूप से मुग़ल दरबारों से रूप बदल कर राजपूतों के ठिकानों ,जागीरो और दरबारों में दाखिल हुईं । मुगल प्रभाव ने आस्तीनों को लम्बा कर दिया और लहंगों के घेर बढ़ गये, ओढ़नियाँ छोटी और बारीक हो गईं ।

मुग़ल दृहिन्दू समन्वय ने केवल सजावट के तरीकों को ही प्रभावित नहीं किया बल्कि वस्त्र शिल्प को जातिगत आधार भी दे दिया जैसे दस्तकारी में पारंगत छीपा पुश्तैनी रूप से कपड़े छापने का ही काम करते थे,खत्री मुस्लिम रंगरेज थे तो बोहरा समुदाय के लोग सोने चांदी के कसीदे निकालने में कुशल थे

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 12, December- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

और इसी कारण राजाओं द्वारा उनको प्रश्रय दिया गया नतीजतन यहाँ के वस्त्र अलंकरणों में मुग़ल प्रभाव दिखने लगा। अलंकरण की ये नई शैलियाँ नये विजेता की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का परिचायक थी।
प्रशासनिक घटनाक्रम को लेखबद्ध करने और उनका नियन्त्रण करने में मुगल पारंगत थे। नतीजतन हर रजवाड़े में कपड़ों के चार विभाग "किकिराखाना", "जरगरखाना", "तोसाखाना" एवं "खजाना बेहला" कहलाते थे का हर लेनदेन लिखा जाने लगा। यहाँ भी उर्दू के शब्दों को जस का तस समाहित कर लिया गया। बुरहानी मलमल और मुल्तानी छींट, चोगा ,जामा , अचकन, सिरोपाव,तुर्रा ऐसे अनेकों नाम ये बताते हैं कि वस्त्र शिल्प में मुगल प्रभावों को तत्कालीन समाज आत्मसात करता गया और राजस्थान को समृद्ध वस्त्र परम्पराओं के रूप में वह शानदार विरासत दी जिसे वह आज भी संजोये है।
वस्त्र शिल्प दृष्टि और दर्शन को सम्मिलित रूप से अभिव्यक्त करते हैं। कला इसका माध्यम है और कलाकार सामाजिक–धार्मिक समुदायों के बीच कड़ी का काम करता है।
सम्मिलित संस्कृतियों से विकसित शैलियां एक निश्चित ऐतिहासिक युग में एक निश्चित क्षेत्र के लोगों के चरित्र की प्रस्तुति करती हैं और अपनी सांस्कृतिक परंपरा का गठन भी करती हैं।
यह शैलियां युग का उत्पाद होती है जिनमें निरंतर परिवर्तन होता रहता है लेकिन साथ हो वे अपने मूल स्वरूप को भी बनाये रखती हैं।
वस्त्र परम्पराएं हमारी साझा सांस्कृतिक धरोहर हैं जिनको सहेजने के लिए हमारा इतिहास और हमारी चेतना समर्थ है।

सन्दर्भः

1 गहलोत सुखवीर सिंह राजस्थान के रीतिरिवाज, रोशनलाल जैन एंड संस, जयपुर 1966
2 गुप्ता, के. एस, राजस्थान का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर 1968
3 मयंक, मांगीलाल व्यास राजस्थान के अभिलेख ,राजस्थान साहित्य मंदिर 1980
4 दास विशम्भर ,राजस्थान के ऐतिहासिक स्त्रोत 1966
5 Monograph on survey of Printing and dying industry of Rajasthan,Gujrat & Madhya Pradesh", Dr. Asha Bhagat, Radha Publication, New Delhi
6 Ojha, gaurishankar hirachand, history of rajputana, vaidik yantralay, 1941
7 Ojha Hirachand, Early History Of Rajputana, Vol – I, 1937